युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के छठवीं पुण्यतिथि

के उपलक्ष्य में आयोजित

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर 3 सितम्बर, 2020। **गोखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के 6वीं पुण्यतिथि** के अवसर पर आज चौथे दिन **'संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति'** विषय पर मुख्य वक्ता **उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के अध्यक्ष प्रो0 सदानन्द गुप्त** ने कहा कि गोरक्षनाथ मंदिर केवल आध्यात्मिक साधना का केंद्र ही नहीं रहा है बल्कि सामाजिक व सांस्कृतिक सहित अनेक प्रविधियों का बड़ा महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। भारत की प्राचीन उज्जवल परंपरा का पुनर आख्यान व विकास के दायित्व का भी निर्वहन श्री गोरखनाथ मंदिर ने भली–भांति किया है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर द्वारा संचालित संस्थाओं में भारत की प्राचीन परंपरा, संस्कृत शिक्षा के माध्यम से अभी जीवित है। साथ ही प्राचीन चिकित्सकीय परंपरा को नए कलेवर के साथ आयुर्वेद के रूप में आज यहां जीवित है।

उन्होंने कहा कि गोरक्षपीठ के दोनों पूज्य संतों का असीम योगदान राष्ट्रीय एकता और संस्कृत की संपूर्णता में रहा है। संस्कृत वांग्मय केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु पूरे मानव जाति के लिए महत्वपूर्ण है। उसकी प्राचीनता, व्यापकता व विशेषता तथा उसके सौंदर्य व मधुरता से आज तक का भारतीय इतिहास ज्योतिर्गमय हो उठता है, तथा मानव मात्र का हृदय आनंद विह्वल हो उठता है। उसको एक ऐसे आनंद लोक की झांकी मिल जाती है जिसमें पहुंचने पर उसका जीवन सार्थक हो जाता है। मानव संस्कृति व उसमें अपने राष्ट्र का स्थान जानने के लिए, अपने राष्ट्र की आत्मा को पहचानने के लिए तथा कला की दृष्टि से आनंद विह्वल होने के लिए, संपूर्ण जीव मात्र को संस्कृत वांग्मय का अध्ययन अत्यंत ही आवश्यक है। जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं, ऐसी कोई रीति नहीं, ऐसी कोई कला नहीं जिसमें संस्कृ त वांग्मय पूर्णता को प्राप्त न किया हो।

उन्होंने ने कहा कि भारतीय संस्कृति की इस महान परंपरा को व्यक्त करने वाली भाषा संस्कृत ही है। पिछले 7000 वर्षों से निरंतर संस्कृत में लेखन हो रहा है। संस्कृत भाषा ने न केवल हिंदू ग्रंथ गढ़े अपितु बौद्ध जैन न जाने कितने शास्त्र इस भाषा में सुरक्षित व संबर्धित हैं। संस्कृत में ज्ञान–विज्ञान की लगभग तीन करोड़ पांडुलिपियां सुरक्षित हैं, जो कि ग्रीक व लैटिन की पांडुलिपियों से 100 गुना अधिक हैं। यह जो संस्कृत है एक ओर हमें अपने जड़ों से जोड़ती है तो दूसरी ओर हमें समकालीन तथा भविष्य की आवश्यकताओं को भी साकार करने की संभावना बताती है। संविधान का भी यही संकेत है कि संस्कृत से पारिभाषिक शब्दावली अधिक से अधिक बनाई जाए।

उन्होंने कहा कि आज संस्कृत का ज्ञान इसलिए भी आवश्यक है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान–विज्ञान जैसे आयुर्वेद, वास्तु शास्त्र निर्माण, कला अथवा वैदिक गणित के साथ–साथ भारतीय संस्कृति का प्रामाणिक स्वरूप इसमें निहित है। संस्कृत वह मानव भाषा है जिसका निरंतर संस्कारित, परिष्कृत व परिमार्जित किया जाता रहा है। संस्कृत विश्व की एकमात्र भाषा है जिसको परिष्कृत कर मानव मात्र के कल्याण की भाषा बना दिया गया।

उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष डॉ0 हृदय नारायण दीक्षित ने कहा कि प्रकृति, हमारी परंपरा, हमारा दर्शन सदा से है। प्रकृति सतत सृजन शील भी रहती है। नई पौध, नई कली, नए फूल तथा सुगंध के रूप में प्रतिपल पुनर्नवा होती रहती है और हम प्रकृति के नए रूपों व उसके प्रपंचों को देखकर आह्लादित होते रहे हैं। मनुष्य प्रकृति का अंग है। प्रकृति ने हमें

धरती, आकाश, नदियां, तारे, चंद्रमा इत्यादि से सुभाषित ऐसा वातावरण दिया है। जिसमें सभी कर्मरत रहते हैं। यह वातावरण भारत में ऋग् वेद व उसके रचनाकाल से बहुत प्राचीन है।

उन्होंने कहा कि आकाश को अनंत देखकर हमारे पूर्वजों ने उसे पिता कहा है। दुनिया के किसी भी चिंतन धारा में इतनी वास्तविकता नहीं है। भारतीय चिंतन के शोध व बोध में पृथ्वी को माता कहा गया है। पूरा विश्व ही एक इकाई है। भारतीय चिंतन धारा को विराट इकाई माना गया है। जिसमें सब कुछ समाहित है। भारत के राष्ट्रीय जीवन की चिंतन पद्धति, हमारा जीवन दर्शन, हमारा गीत–संगीत, काव्य सब कुछ पूर्वजों के वातायन संस्कृत में समाहित है। संस्कृत मनुष्य के ही अपने श्रम व तप का परिणाम है। वह उच्चतम अंश है जिसमें सारी साधनाओं का, प्रकृति के शक्तियों के कोप से बचने का, नया दृष्टिकोण समझने का, उस दृष्टिकोण के आधार पर संपूर्ण विश्व को परिवार मानने का सबकुछ संस्कृत में समाहित है। प्रकृति का प्रसाद जिसको लेकर हमारे पूर्वजों ने सम्यक अध्ययन, चिंतन व सुसंगत प्रयोगों द्वारा विश्व के लिए जिसको गढ़ा उसका नाम संस्कृत ही है।

हमारा राष्ट्र भाव एक संस्कृति, एक राष्ट्र इस पर खड़ा हुआ है। यह एक वैदिक संस्कृ ति है और यह संस्कृत की धारा अविच्छिन्न रूप से बहती चली आ रही है। भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों की जोड़ नहीं है। मानव के आंतरिक जीवन को और अधिक शाश्वत बना सकने का ज्ञान संस्कृत में समाहित है। संस्कृत ने भारतीय संस्कृति को प्रवहमान बनाया। कुछ लोग इसे मृत भाषा कहते हैं, हमें उसका प्रतिकार करना चाहिए।

महराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं पूर्व कुलपति प्रो0 उदय प्रताप सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि संस्कृति भाषा में विश्व बंन्धुत्व एवं विश्व कल्याण की भावना समाहित है, जो भारतीय संस्कृति की विशेषता है। हमारी भारतीय संस्कृति में माँ शब्द बहुत ही गम्भीर है। इसलिए भारत जिन तत्वों को अत्यन्त प्रिय कहा गया है उसको माँ शब्द से सम्बोधित किया जाता है। इसलिए अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना जागृत करने के लिए भारतीय संस्कृति में देश को भारत माँ कहा गया है। यह भावना हमारी संस्कृति को महान बनाती है।

मंच पर दिगम्बर अखाड़ा के महन्त सुरेशदास जी महाराज, प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, देवीपाटन के महन्त मिथिलेशनाथ जी उपस्थित रहें। वैदिक मंगलचारण डॉ0 रंगनाथ त्रिपाठी और गोरक्षाष्टक पाठ प्रांजल त्रिपाठी तथा संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ0 प्रदीप राव, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, प्रमथनाथ मिश्र, डॉ0 अरूण प्रताप सिंह, डॉ0 अरविन्द चतुर्वेदी, डॉ0 अभिषेक पाण्डेय, डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह, डॉ0 रोहित मिश्र, डॉ0 फूलचन्द गुप्ता, विनय गौतम, डॉ0 प्रांगेश मिश्र आदि का विशेष सहयोग रहा।